

प्रीलमिस फैक्ट्स: 01 जुलाई, 2020

- ग्लोबबा एंडरसोनी
- जी4 वायरस
- असम कीलबैक
- राजाजी नेशनल पार्क

ग्लोबबा एंडरसोनी Globba Andersonii

लगभग 136 वर्षों के अंतराल के बाद पुणे एवं केरल के शोधकर्त्ताओं की टीम ने तीस्ता नदी घाटी क्षेत्र के पास सक्किमि हिमालय में ग्लोबबा एंडरसोनी (Globba Andersonii) नामक एक दुर्लभ व गंभीर रूप से लुप्तप्राय पौधे की प्रजाति को पुनः खोजा है।



प्रमुख बद्दि:

- इस पौधे को आमतौर पर 'डान्सिंग लेडीज़' (Dancing Ladies) या 'स्वान फ्लावरस' (Swan Flowers) के रूप में जाना जाता है।
- इस पौधे को इससे पहले वर्ष 1875 में देखा गया था। इसके बाद इसे विलुप्त मान लिया गया था।
- इस प्रजाति के संग्रह के शुरुआती रिकॉर्ड वर्ष 1862-70 की अवधि के बीच के थे जब इसे स्कॉटिश वनस्पतशास्त्री थॉमस एंडरसन (Thomas Anderson) ने सक्किमि एवं दार्जलिंग से एकत्र किया था। इसके बाद वर्ष 1875 में ब्रिटिश वनस्पतशास्त्री सर जॉर्ज किंग (Sir George King) ने सक्किमि हिमालय से इसे एकत्र किया था।
- ग्लोबबा एंडरसोनी (Globba Andersonii) की नमिनलखिति विशेषताएँ हैं:
 - सफेद फूल
 - गैर-अनुबंध परागकोष (एक पुंकेसर का भाग जिसमें पराग होता है)
 - पीला अधर
- इस प्रजाति को 'गंभीर रूप से लुप्तप्राय' (Critically Endangered) और 'संकीर्ण रूप से स्थानिक' (Narrowly Endemic) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- यह प्रजाति मुख्य रूप से तीस्ता नदी घाटी (Teesta River Valley) क्षेत्र तक ही सीमिति है जिसमें सक्किमि हिमालय एवं दार्जलिगि पर्वत श्रृंखला शामिल हैं।
- यह पौधा आमतौर पर सदाबहार वनों के उपांत में चट्टानी ढलानों पर लथिोफाइट (चट्टान या पत्थर पर उगने वाला पौधा) के रूप में घने क्षेत्रों में उगता है।

जी4 वायरस

G4 Virus

चीन में वैज्ञानिकों द्वारा एक नए वायरस जी4 (G4) की खोज की गई है जो वर्ष 2009 के [स्वाइन फ्लू](#) से काफी मलिता-जुलता है।

प्रमुख बदि:

- इस जी4 वायरस का पूरा नाम **जी4 ईए एच1 एन1** (G4 EA H1N1) है। इसमें मनुष्यों में महामारी फैलाने की क्षमता है।
- चीन में सुअरों के लिये नगिरानी कार्यक्रम के दौरान वहाँ के नेशनल इन्फ्लुएंजा सेंटर (National Influenza Centre) सहति कई संस्थानों में वैज्ञानिकों द्वारा G4 वायरस का पता लगाया गया था।
- यह नगिरानी कार्यक्रम वर्ष 2011-18 के बीच चीन के 10 प्रांतों में सुअरों के 30,000 से अधिक स्वाब (Swab) नमूनों को एकत्र करके शुरू कथिया गया था।
- इन नमूनों में से शोधकर्त्ताओं ने 179 [स्वाइन फ्लू वायरस](#) को अलग कथिया था जनिमें से अधकिंश नए पहचाने गए जी4 वायरस के थे।
 - परीक्षणों में पाया गया कि यह वायरस जूनोटकि संक्रमण (पशु से मानव में) उत्पन्न कर सकता है कति अभी तक वायरस के व्यक्त-से-व्यक्ति में संचरण के कोई सबूत नहीं हैं।
- वैज्ञानिकों का मानना है कि नया G4 वायरस, [H1N1 वायरस](#) का ही एक परंपरागत रूप है जो वर्ष 2009 की स्वाइन फ्लू महामारी के लिये ज़िम्मेदार था।

असम कीलबैक

Assam keelback

एक सदी से भी अधकि समय के बाद [भारतीय वन्यजीव संस्थान](#) (Wildlife Institute of India) की एक टीम ने वर्ष 2018 में असम-अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर [पोबा आरक्षति वन](#) (Poba Reserve Forest) के पास सांप की एक प्रजाति असम कीलबैक (Assam keelback) को पुनः खोजा था।



प्रमुख बदि:

- इसका वैज्ञानिक नाम 'ऐम्फिएस्मा पीली' (Amphiesma Pealii) है।
- इससे पहले इस सांप की खोज 129 वर्ष पहले ऊपरी असम में चाय की रोपाई करने वाले ब्रिटिश नागरिक **सैमुअल एडवर्ड पील** (Samuel Edward Peal) ने की थी।
- सैमुअल एडवर्ड पील ने असम के सदाबहार वनों से भूरे रंग के दो छोटे गैर वषिले सांप एकत्र कथिये थे और उन्हें संग्रहालय में जमा कथिया था। यह स्थान अब असम का शविसागर ज़िला कहलाता है।
- वर्ष 1891 में एक ब्रिटिश प्राणी वज्जानी **विलियम ल्यूटलेय स्क्लेलैटर** (William Lutley Sclater) ने इस सांप को अपने एक वविरण में एक नई प्रजाति के रूप में दर्ज कथिया और इसका नाम वहाँ के तब के कलेक्टर एडवर्ड पील और उस जगह के नाम पर रखा गया जहाँ इसे खोजा गया था।

पोबा आरक्षति वन (Poba Reserve Forest):

- पोबा आरक्षति वन असम एवं अरुणाचल प्रदेश दोनों राज्यों में फैला एक जंगल है।
- वर्ष 2018 में कीलबैक सांप को अरुणाचल प्रदेश वाले पोबा आरक्षति वन में खोजा गया था।

- 26 जून, 2020 को असम कीलबैक की पुनः खोज से संबंधित विवरण को अंतरराष्ट्रीय पत्रिका **वर्टेब्रेट ज़ूलॉजी** (Vertebrate Zoology) में प्रकाशित किया गया था।
- यह प्रजाति लगभग 60 सेमी लंबी होती है तथा इसका रंग भूरा एवं पेट एक पैटर्न की तरह होता है।
- जब अंग्रेजों ने इस सांप की खोज की थी तो उन्होंने इसे बड़े आकार वाली कीलबैक प्रजातियों (Larger Keelback Species) के रूप वर्गीकृत किया था कति डीएनए अध्ययन में पाया गया कि यह भारत के विशेष रूप से सामान्यीकृत कीलबैक सांप से संबंधित नहीं है बल्कि चार प्रजातियों के एक छोटे समूह के एक वर्ग **हेरपेटोरिअस** (Herpetoreas) से संबंधित है जो पूर्वी एवं पश्चिमी हिमालय, दक्षिण चीन तथा पूर्वोत्तर भारत में पाई जाती हैं।

राजाजी नेशनल पार्क

Rajaji National Park

उत्तराखंड में **राजाजी नेशनल पार्क** (Rajaji National Park) के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में **वन गुज्जर समुदाय** (Van Gujjar community) के लोगों ने आरोप लगाया है कि राज्य के वन विभाग के कम-से-कम छह अधिकारियों ने उनके डेरों (अस्थायी झोपड़ियों) को ध्वस्त करने की कोशिश की और उनका शारीरिक शोषण किया।

राजाजी नेशनल पार्क (Rajaji National Park):

- राजाजी नेशनल पार्क उत्तराखंड राज्य में स्थित है। वर्ष 1983 में उत्तरांचल के राजाजी वन्यजीव अभयारण्य को मोतीचूर एवं चिल्ला वन्यजीव अभयारण्यों को संयुक्त करके राजाजी राष्ट्रीय उद्यान (Rajaji National Park) बनाया गया।
- इस पार्क का नाम सी. राजगोपालाचारी (जन्हें 'राजाजी' भी कहा जाता है) के नाम पर रखा गया है जो भारत के एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं पहले गवर्नर जनरल थे।
- राजाजी राष्ट्रीय उद्यान 820.42 वर्ग किमी. के क्षेत्र में फैला हुआ है।
- राजाजी नेशनल पार्क हिमालय की तलहटी में शिवालिक पर्वतमाला की नचिली पहाड़ियों एवं तलहटी में अवस्थित है और यह शिवालिक पर्यावरण-प्रणाली (Shivalik Eco-system) का प्रतिनिधित्व करता है।
- तीन अभयारण्यों (चिल्ला, मोतीचूर एवं राजाजी) को मिलाकर बनाया गया राजाजी नेशनल पार्क उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल, देहरादून एवं सहारनपुर जिलों में फैला हुआ है।

वन गुज्जर समुदाय (Van Gujjar community):

- वन गुज्जर मूल रूप से एक खानाबदोश या यायावर जनजाति है। यह एक मुसलमि समुदाय है।
- यह जनजाति मूल रूप से जम्मू एवं कश्मीर में निवास करती थी कति अपने मवेशियों के भोजन के लिये समृद्ध जंगलों एवं घास के मैदानों की तलाश में ये उत्तराखंड एवं हिमाचल प्रदेश में भी पाई जाती है।
- वन गुज्जरों का जीवन अपने जानवरों की देखभाल करने पर केंद्रित है।
- ये हिमालय के तराई क्षेत्रों अर्थात् शिवालिक श्रेणी के वनों में सर्दियों बतिते हैं जहाँ रसीले पत्ते भैंसों के लिये भरपूर चारा उपलब्ध कराते हैं।
- प्रत्येक वन गुज्जर परिवार अपने स्वयं के अस्थायी बेस कैम्प में रहता है जसि टहनियों एवं कीचड़ से बनाया जाता है इसे 'डेरा' भी कहा जाता है।
- ये अपनी भैंसों को पानी पलाने के लिये डेरों के पास ही छोटे गड्डों का निर्माण भी करते हैं।
- प्रवास के दौरान एक वन गुज्जर परिवार में प्रत्येक सदस्य की जानवरों के साथ एक उचित परिभाषित भूमिका (उम्र के आधार पर) होती है अर्थात् वयस्क बड़े भैंस एवं घोड़ों के साथ चलते हैं जबकि बच्चे बछड़ों के साथ धीमी गति से चलते हैं।
- इनकी अपनी एक बोली है जसि 'गुज्जरी' (Gujjari) कहा जाता है जो डोगरी एवं पंजाबी भाषाई का युग्मन है।